# साहित्य मानव सभ्यता के विकास की गाथा है

प्रा .सी.व्ही . ठाकूर

मानव को जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन के हर क्षेत्र में समाज की आवश्यकता पड़ती हैमानव समाज का एक अभिन्न . जीवन में मानव .अंग हैके साथ क्या घटित होता है, उसे साहित्यकार शब्दों में रचकर साहित्य की रचना करता है, अर्थात साहित्यकार जो देखता है, अनुभव करता है, चिंतन करता है, विश्लेषण करता है, उसे लिख देता हैसाहित्य सृजन के लिए . साहित्य .ती हैविषयवस्तु समाज के ही विभिन्न पक्षों से ली जाकार साहित्य की रचना करते समय अपने विचारों और कल्पना को भी सम्मिलित करता है.

साहित्य संस्कृत के 'सहित' शब्द से बना है -संस्कृत के विद्वानों के अनुसार साहित्य का अर्थ है."हितेन सह सहित तस्य भवः" अर्थात कल्याणकारी भाव लोककल्याण के कहा जा सकता है कि साहित्य .लिए ही सृजित किया जाता हैसाहित्य का . उद्देश्य मनोरंजन करना मात्र नहीं है, अपितु इसका उद्देश्य समाज का मार्गदर्शन करना भी है-राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में .

प्राचीन काल में भारतीय सभ्यता अति समृद्ध थीहम आज भी उस प हमारी सभ्यता इतनी उन्नत थी कि .र गर्व करते हैं . विश्व में प्राचीन वाचिक साहित्य आदिवासी भाषाओं में .किसी भाषा के वाचिक और लिखित सामग्री को साहित्य कह सकते हैं व्यास .भारतीय संस्कृत साहित्य ऋग्वेद से प्रारंभ होता है.प्राप्त होता है, वाल्मीकि जैसे पौराणिक ऋषियों ने महाभारत एवं रामायण जैसे महाकाव्यों की रचना कीभास ., कालिदास एवं अन्य कवियों ने संस्कृत में नाटक लिखे, साहित्य की अमूल्य धरोहर हैभक्त . साहित्य में अवधी में गोस्वामी तुलसीदास, बृज भाषा में सूरदास, मारवाड़ी में मीरा बाई, खड़ीबोली में कबीर, रसखान, मैथिली में विद्यापति आदि प्रमुख हैंजिस राष्ट्र और समाज का साहित्य जितना अधिक समृद्ध होगा ., वह राष्ट्र और समाज भी उतना ही समृद्ध होगाकिसी राष्ट्र और समाज की स्थिति जाननी हो ., तो उसका साहित्य देखना चाहिए.

साहित्य समाज का दर्पण है, समाज का प्रतिबिम्ब है, समाज का मार्गदर्शक है तथा समाज का लेखाकिसी भी .जोखा है-किसी भी काल के साहित्य .साहित्य लोकजीवन का अभिन्न अंग है .राष्ट्र या सभ्यता की जानकारी उसके साहित्य से प्राप्त होती है से उस समय की परिस्थितियों, जनमानस के रहनसहन-, खानहित्य को समाज सा .पान व अन्य गतिविधियों का पता चलता है-प्रभावित करत है और साहित्य समाज पर प्रभाव डालता हैसाहित्य का समाज से वही संबंध है.दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं ., जो संबंध आत्मा का शरीर से होता हैमहान विद्वान योननागोची .अमर है-साहित्य अजर .साहित्य समाज रूपी शरीर की आत्मा है . नष्ट हो सकता है के अनुसार समाज, राष्ट्र भी नष्ट हो सकता है, किन्तु साहित्य का नाश कभी नहीं हो सकता.

मानव सभ्यता के विकास में साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैविचारों ने साहित्य को जन्म दिया तथा साहित्य ने . मानव की विचारधारा को गतिशीलता प्रदान की, उसे सभ्य बनाने का कार्य कियामानव की विचा .रधारा में परिवर्तन लाने का कार्य साहित्य द्वारा ही किया जाता हैइतिहास साक्षी है कि किसी भी राष्ट्र या समाज में आज तक जितने भी परिवर्तन आए ., वे सब साहित्य के माध्यम से ही आएसाहित्यकार समाज में फैली कुरीतियों ., विसंगतियों, विकृतियों, अभावों, विसमताओं, असमानताओं आदि के बारे में लिखता है इनके प्रति जनमानस को जागरूक करने का कार्य करता हैसाहित्य जनहित के लिए .

साहित्य और समाज के बीच संबंधों में रुचि शायद ही एक नई घटना है। हम अभी भी पढ़ रहे हैं और इस संबंध में प्राचीन यूनानियों को देखें गणराज्य में, उदाहरण के लिए, प्लेटो दोनों एमएमई प्रस्तुत करता है। डी स्टाले के 1800 के ग्रंथ, जो

साहित्य में अंतर-राष्ट्रीय मतभेदों पर चर्चा करने वाला पहला और अनुकरण के अपने विचार के साथ साहित्यिक प्रतिबिंब के बाद के विचार थे। हालांकि, नया क्या है, समाजशास्त्र के अनुशासन के भीतर साहित्य के अध्ययन की सापेक्ष रूप से वैधता है। यह हाशिए के वर्षों (कालहौं 1 9 8 9) के बाद समाजशास्त्र में संस्कृति में बढ़ती रुचि और समाजशास्त्र पर और अकादमी भर में सांस्कृतिक अध्ययन के बढ़ते प्रभाव के कारण है।

सांस्कृतिक समाजशास्त्र में एक व्यापक रुचि और स्वीकृति का मतलब है कि साहित्य के सामाजिक अध्ययनों के लिए सामान्य प्रकार के अनुसंधान प्रश्नों और विधियों का क्षेत्र अब व्यापक रूप से स्वीकार कर लिया गया है। सकारात्मकता के प्रभुत्व पर दोनों हमलों और उत्तर-पूर्ववाद द्वारा सुझाए गए वैकल्पिक रुचियों की बढ़ती शक्ति के जवाब में समाजशास्त्र ने अपनी पद्धतिगत सीमाएं बढ़ाईं हैं। इसी समयलक्ष्यों में परिवर्तन, और कभी-कभी साहित्य का अध्ययन करने के तरीकों, समाजशास्त्रीय क्षेत्र ने उस क्षेत्र के करीब चले गए हैं जो अभी भी अनुशासन की मुख्यधारा है। इस प्रकार साहित्य की समाजशास्त्र को दो गुट आंदोलन से लाभ मिला है जिसमें (1) समाजशास्त्र एक अनुशासन के रूप में अर्थ के संबंध में अनुसंधान प्रश्नों में अधिक दिलचस्पी और स्वीकार कर रहा है (सीएफ। वुथनो 1 9 87, हालांकि, विशेष रूप से भीतर से अर्थ पर एक मजबूत हमले के लिए संस्कृति शिविर) और गुणात्मक विधियों को रोजगार; और (2) साहित्य की समाजशास्त्र अधिक मुख्यधारा के समाजशास्त्रीय क्षेत्रों की दिशा में गुणात्मक विधियों के साथ विलय और हेर्मेनेटिक अनुसंधान प्रश्नों के साथ अनुभवजनन के माध्यम से विकसित हुई है।

साहित्य के माध्यम से समाजशास्त्र एक अंतिम प्रकार का पारंपरिक सामाजिक हित साहित्य में भी एक अंतर्निहित प्रतिबिम्बित दृष्टिकोण से उत्पन्न होता है। इस प्रकार का काम साहित्य को सामाजिक अवधारणाओं और सिद्धांतों के अनुकरणीय के रूप में देखता है या किसी अन्य तरह के डेटा के रूप में साहित्य का उपयोग करता है। जबकि कॉसर (1 9 72) संकलन ने पूर्व परंपरा का उदाहरण दिया है, हाल ही में एएसए प्रकाशन टीचिंग सोसाइजी विद फिक्शन ने शैली की दृढ़ता को दर्शाया है। बाद के उदाहरण पूरी तरह से बहुत अधिक हैं, उदाहरण के लिए, किशोर लेखकों (क्लार्क और मॉरिस 1995) के उपन्यासों में ज्ञान के आधार में मतभेद को जोड़कर लिंग और दौड़ में अलग-अलग epistemological रुख के हाल के अप्रसेंद्रिक और नारीवादी दावों का एक लेख परीक्षण शामिल है। इस तरह के काम साहित्यिक "वास्तविकता" की मध्यस्थता प्रकृति की अनदेखी की उपेक्षा करते हैं। ये चर्चाएं, हालांकि आम हैं, साहित्य के समाजशास्त्र का उचित भाग नहीं हैं।

साहित्य के माध्यम से समाजशास्त्र एक अंतिम प्रकार का पारंपरिक सामाजिक हित साहित्य में भी एक अंतर्निहित प्रतिबिम्बित दृष्टिकोण से उत्पन्न होता है। इस प्रकार का काम साहित्य को सामाजिक अवधारणाओं और सिद्धांतों के अनुकरणीय के रूप में देखता है या किसी अन्य तरह के डेटा के रूप में साहित्य का उपयोग करता है। जबकि कॉसर (1 9 72) संकलन ने पूर्व परंपरा का उदाहरण दिया है, हाल ही में एएसए प्रकाशन टीचिंग सोसाइजी विद फिक्शन ने शैली की दृढ़ता को दर्शाया है। बाद के उदाहरण पूरी तरह से बहुत अधिक हैं, उदाहरण के लिए, किशोर लेखकों (क्लार्क और मॉरिस 1995) के उपन्यासों में ज्ञान के आधार में मतभेद को जोड़कर लिंग और दौड़ में अलग-अलग epistemological रुख के हाल के अप्रसेंद्रिक और नारीवादी दावों का एक लेख परीक्षण शामिल है। इस तरह के काम साहित्यिक "वास्तविकता" की मध्यस्थता प्रकृति की अनदेखी की उपेक्षा करते हैं। ये चर्चाएं, हालांकि आम हैं, साहित्य के समाजशास्त्र का उचित भाग नहीं हैं।

वर्तमान में मीडिया समाज के लिए मज़बूत कड़ी साबित हो रहा हैपत्रों की प्रासंगिकता सदैव रही है और भविष्य-रसमाचा . मीडिया में परिवर्तन युगानुकूल है.में भी रहेगी, जो स्वाभाविक है, लेकिन भाषा की दृष्टि से समाचारपत्रों में गिरावट देखने को मिल - पत्रों-इसका बड़ा कारण यही लगता है कि आज के परिवेश में समाचार .रही हैसे साहित्य लुप्त हो रहा है, जबकि साहित्य को समृद्ध करने में समाचारपत्रों की महती भूमिका रही है-, परंतु आज समाचारपत्रों ने ही स्वयं को साहित्य से दूर कर लिया है, जो अच्छा संकेत नहीं हैपत्रों में साहित्य का समावेश हो और वे अपनी पर-आज आवश्यकता है कि समाचार .ंपरा को समृद्ध बनाएंवास्तव .

पत्र को साहित्य से दूर नहीं मानते थेमें पहले के संपादक समाचार, बल्कि त्वरित साहित्य का दर्जा देते थेअब न उस तरह के . संपादक रहे, न समाचारस में सिमटसाहित्य मात्र साप्ताहिक छपने वाले सप्लीमेंट् .पत्रों में साहित्य के लिए स्थान- गया है-समाचार . पत्रों में संपादक का दायित्व ऐसे लोग निभा रहे हैं-पत्रों से साहित्य के लुप्त होने का एक बड़ा कारण यह भी है कि अब समाचार, जिनका साहित्य से कभी कोई सरोकार नहीं रहापत्रों के मालिकों को ऐसे संपादक चाहिएं-समाचार ., जो उन्हें मोटी धनराशि कमाकर दे सकेंपत्रों को अधिक से अधिक विज्ञापन दिला सकें-चारसमा ., राजनीतिक गलियारे में उनकी पहुंच बढ़ सके

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए

महान साहित्यकारों ने साहित्य को लेकर अपने विचार व्यक्त किए हैंप्रमुख साहित्यकार बीसवीं शताब्दी के हिन्दी के . आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने साहित्य को'जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब माना है आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने साहित्य . को 'ज्ञानराशि का संचित कोश' कहा है पंडित बाल कृष्ण भट्ट साहित्य को .'जन समूह के हृदय का विकास' मानते हैं.

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com